इकाई-I

1. गाती तो है

- दुष्यंत कुमार

प्रस्तावना प्रसंग–

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती,
कोशिश करनेवालों की हार नहीं होती।

–श्री हरिवंशराय बच्चन

प्रश्न

1. 'लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती' का भाव स्पष्ट कीजिए।
2. सफलता पाने के लिए सबसे ज़रूरी क्या है?
3. प्रस्तुत पंक्तियों का संदेश क्या है?

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

इस नदी की धार में
ठंडी हवा आती तो है।
नाव जर्जर ही सही,
लहरों से टकराती तो है।

एक चिनगारी कहीं से
ढूँढ़ लाओ दोस्तो!
इस दीये में तेल से
भीगी हुई बाती तो है।

एक खँडहर के हृदय सी,
एक जंगली फूल सी,
आदमी की पीर
गूँगी ही सही, गाती तो है।

एक चादर साँझ ने
सारे नगर पर डाल दी,
यह अँधेरे की सड़क
उस भोर तक जाती तो है।

निर्वचन मैदान में
लेटी हुई है जो नदी,
पत्थरों से, ओट में
जा-जाके बतियाती तो है।

दुःख नहीं कोई कि अब
उपलब्धियों के नाम पर,
और कुछ हो या न हो,
आकाश सी छाती तो है।

- दुष्यंत कुमार

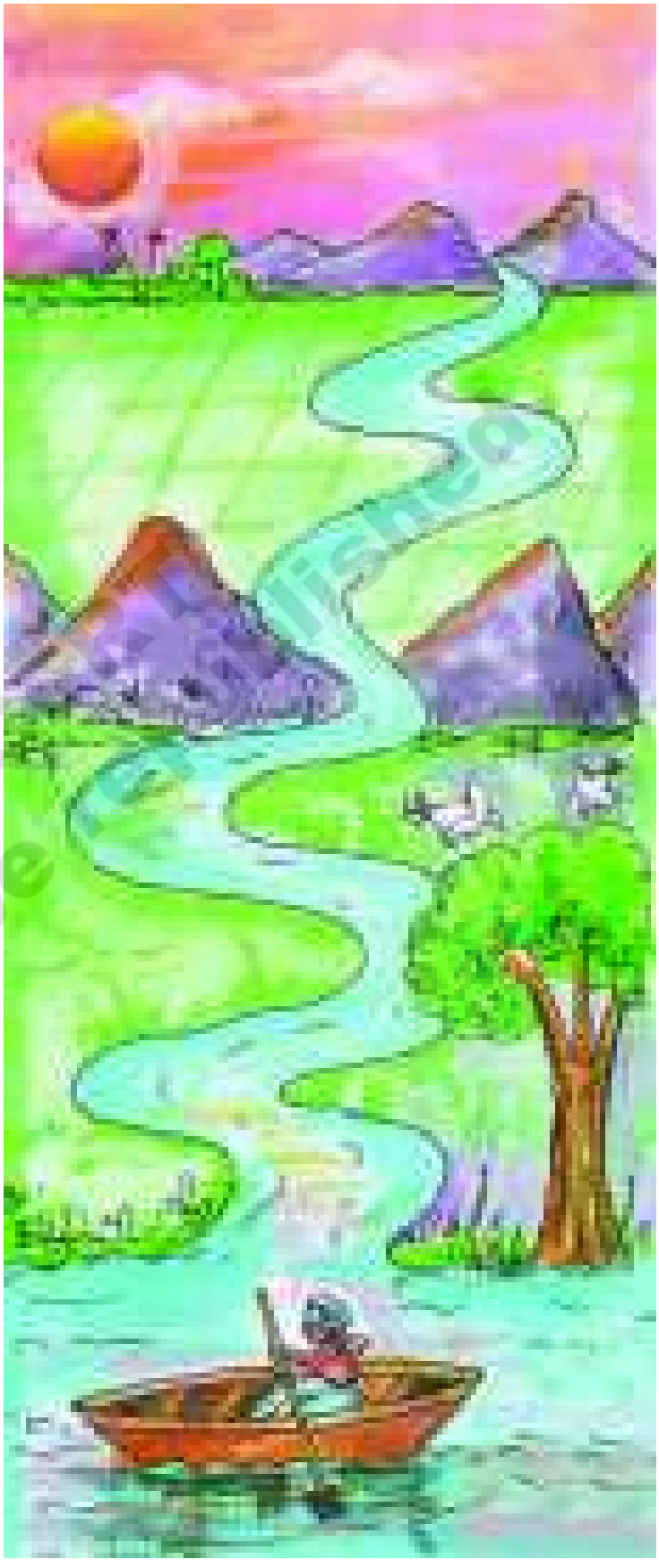

© SCERT not to be republished

प्रश्न-अभ्यास

सुनिए-बोलिए

1. "नाव जर्जर ही सही, लहरों से टकराती तो है।" कवि इन पंक्तियों के माध्यम से जीवन पर्यंत संघर्ष करने की प्रेरणा देता है। सफलता प्राप्त करने के लिए संघर्ष करने की प्रबल इच्छा का होना आवश्यक है। चर्चा कीजिए और बताइए कि सफलता प्राप्त करने के लिए व्यक्ति में कौन-कौन से गुण होने चाहिए?
2. हम जीवन में अनेक कार्य करते हैं। कभी सफल होते हैं, तो कभी असफल। आप अपने घर के बड़ों से उनके जीवन की कोई ऐसी घटना पूछिए, जब उन्होंने अपनी असफलता, सफलता में बदली हो।

पढ़िए

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. कवि को ऐसा क्यों लगता है कि आदमी की पीड़ा भी गाती है?
2. "एक चिनगारी कहीं से ढूँढ़ लाओ दोस्तो!
   इस दीये में तेल से भीगी हुई बाती तो है।" का भाव स्पष्ट कीजिए।
3. इस ग़ज़ल का शीर्षक 'गाती तो है' दिया गया है। इसके लिए कोई और शीर्षक सुझाइए। कारण बताइए।

II. नीचे दी गयी कुछ सूक्तियाँ पढ़िए। इनका भाव स्पष्ट कीजिए।

(क) असफलता ही सफलता की कुंजी है।

(ख) असफल व्यक्ति ही सफलता का महत्व समझ सकता है।

III. आइए, इसी प्रकार की एक और प्रेरक कविता पढ़ें। इसके रचयिता हमारे राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी हैं। इसे पढ़िए और नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

कुछ काम करो, कुछ काम करो।
जग में रह कर कुछ नाम करो।

© SCERT not to be republished

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो!
समझो जिसमें यह व्यर्थ न हो।
कुछ तो उपयुक्त करो तन को।
नर हो, न निराश करो मन को।।

निज गौरव का नित ज्ञान रहे।
"हम भी कुछ हैं" यह ध्यान रहे।
सब जाये अभी पर, मान रहे।
मरने पर गुंजित गान रहे।
कुछ हो न तजो निज साधन को।।
नर हो, न निराश करो मन को।।

प्रश्न 1. कवि हमें किस प्रकार का काम करने के लिए कह रहा है?

2. "निज गौरव का नित ज्ञान रहे।
"हम भी कुछ हैं" यह ध्यान रहे।
सब जाये अभी पर मान रहे।
मरने पर गुंजित गान रहे।"

और

"दुःख नहीं कोई कि अब उपलब्धियों के नाम पर,
और कुछ हो या न हो, आकाश सी छाती तो है।" के भावों में क्या समानता है?

3. कवि कह रहा है– "कुछ काम करो, कुछ काम करो।" 'कुछ' शब्द का अर्थ 'कम' होता है। इस कविता में कुछ का अर्थ क्या है?

लिखिए

I. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर कम से कम पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. कवि ने 'आदमी की पीड़ा' की तुलना 'खँडहर के हृदय' एवं 'जंगली फूल' से क्यों की होगी?

© SCERT not to be republished

2. इस कविता से आपको क्या संदेश मिलता है? अपने शब्दों में लिखिए।
3. "यह अँधेरे की सड़क उस भोर तक जाती तो है।" इस पंक्ति के द्वारा कवि मनुष्य को हमेशा आशावान रहने को कहता है। हमें सदा आशावान क्यों रहना चाहिए?

II. नीचे दिए गए प्रश्न का उत्तर कम से कम दस वाक्यों में लिखिए।

कवि ने अपनी उपलब्धि 'आकाश सी छाती' अर्थात आत्मगौरव को माना है। हमारे जीवन में आत्मगौरव का क्या महत्व है?

शब्द भंडार

1. "नाव जर्जर ही सही, लहरों से टकराती तो है।" 'जर्जर' का अर्थ 'जीर्ण-शीर्ण' होता है। 'जर्जर' शब्द का प्रयोग करते हुए दो वाक्य लिखिए।
2. "एक खँडहर के हृदय सी। रेखांकित शब्द का अर्थ लिखिए। 'खँडहर' का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।
3. "आदमी की पीर गूँगी ही सही" यहाँ 'पीर' शब्द का अर्थ 'पीड़ा या दर्द' है। इस शब्द का प्रयोग करते हुए कबीर ने भी एक दोहा लिखा है। जिसमें पीर शब्द अलग-अलग अर्थों में प्रयोग किया गया है। "कबिरा सोई पीर है, जो जाने पर पीर। जो पर-पीर न जानइ, सो काफिर बे-पीर।" इस दोहे को पढ़िए। 'पीर' के अलग-अलग अर्थ समझिए। इन अलग अर्थों के संदर्भ में 'पीर' शब्द के एक-एक वाक्य प्रयोग कीजिए।
4. "आदमी की पीर गूँगी ही **सही**", "नाव जर्जर ही **सही**" यहाँ 'सही' शब्द का प्रयोग हुआ है। आपने 'सही' शब्द के ये प्रयोग देखे। अब नीचे दिये गये वाक्य पढ़िए-

(क) मिठाई न मिली तो मुँह मीठा करने को शक्कर ही **सही**।

(ख) अपने स्वार्थ के लिए दूसरों को गलत ठहराना **सही** नहीं है।

(ग) अब हमसे यह पीड़ा **सही** नहीं जाती।

उपर्युक्त वाक्यों में 'सही' शब्द के तीन अलग प्रयोग हुए हैं। इन्हें समझें। ऐसे ही दो-दो वाक्य प्रयोग स्वयं करें।

© SCERT not to be republished

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

भाषा की बात

'ठंडी हवा', 'जंगली फूल'

विशेषण जिस संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताता है, उसे विशेष्य कहते हैं। ऊपर दिये गये वाक्यांशों में हवा और फूल विशेष्य है, क्योंकि इनकी विशेषता (विशेषण) क्रमशः 'ठंडी' और 'जंगली' शब्दों से ज्ञात हो रही है।

हिंदी विशेषणों के सामान्यतया चार प्रकार माने गए हैं– गुणवाचक विशेषण, परिमाणवाचक विशेषण, संख्यावाचक विशेषण और सार्वनामिक विशेषण।

प्रशंसा

कविता एक बहुत ही सुंदर विधा है। यह सबके हृदय को भाती है। इसमें छिपा संगीत सबको आनंदित करता है। कविता पढ़ते समय ऐसा लगता है जैसे हम कोई गीत गुनगुना रहे हैं। गीतों व कविताओं का हमारे जीवन में क्या महत्व है?

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

यह गज़ल गाइए। अपनी अनुभूति डायरी में लिखिए।

परियोजना कार्य

आशावादी भाव की कुछ अन्य कविताएँ संकलित कीजिए।

क्या मैं ये कर सकता हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के भाव के बारे में बातचीत कर सकता हूँ। 2. पाठ के विषय में मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति कर सकता हूँ। 3. पाठ के शब्दों का प्रयोग अपनी भाषा में कर सकता हूँ। 4. कविता का रसास्वादन करते हुए गा सकता हूँ। 5. अपनी अनुभूति डायरी के रूप में लिख सकता हूँ।		

© SCERT not to be republished

इकाई-I

2. लाख की चूड़ियाँ

-कामतानाथ

प्रस्तावना प्रसंग–

अनेक बार मैंने बदलू को समझाया कि यदि वह बेडौल मटकों के स्थान में कुछ सुंदर नक्काशीदार झज्झर और सुराहियाँ बनावे, तो वे शहर में भी बिक सकेंगे। पर उसने चाक पर दृष्टि जमाकर खरखराते गले से जो उत्तर दिया, उसका अर्थ था कि– उसके बाप–दादा, परदादा सब ऐसे ही घड़े बनाते रहे हैं– वह गँवई–गाँव का कुम्हार ठहरा–उससे शहराती बर्तन न बन सकेंगे। फिर मैंने अधिक कहना–सुनना व्यर्थ समझा।

'बदलू' रेखाचित्र से
'अतीत के चलचित्र' –महादेवी वर्मा

प्रश्न

1. लेखिका ने बदलू को नक्काशीदार झज्झर और सुराहियाँ बनाने के लिए क्यों कहा?
2. लेखिका की बात बदलू ने क्यों नहीं मानी?
3. लेखिका ने अंत में अधिक कहना–सुनना व्यर्थ समझा। उनके स्थान पर आप होते तो क्या करते?

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

सारे गाँव में बदलू मुझे सबसे अच्छा आदमी लगता था क्योंकि वह मुझे सुंदर-सुंदर लाख की गोलियाँ बनाकर देता था। मुझे अपने मामा के गाँव जाने का सबसे बडा चाव यही था कि जब मैं वहाँ से लौटता था तो मेरे पास ढेर सारी गोलियाँ होतीं, रंग-बिरंगी गोलियाँ जो किसी भी बच्चे का मन मोह लें।

वैसे तो मेरे मामा के गाँव का होने के कारण मुझे बदलू को 'बदलू मामा' कहना चाहिए था परंतु मैं उसे 'बदलू मामा' न कहकर बदलू काका कहा करता था जैसा कि गाँव के सभी बच्चे उसे कहा करते थे। बदलू का मकान कुछ ऊँचे पर बना था। मकान के सामने बड़ा-सा सहन था जिसमें पुराना नीम का वृक्ष लगा था। उसी के नीचे बैठकर बदलू अपना काम किया करता था। बगल में भट्ठी दहकती रहती जिसमें वह लाख पिघलाया करता। सामने एक लकड़ी की चौखट पड़ी रहती जिस पर लाख के मुलायम होने पर वह उसे सलाख के समान पतला करके चूड़ी का आकार देता। पास में चार-छह विभिन्न आकार की बेलननुमा मुंगेरियाँ रखी रहतीं जो आगे से कुछ पतली और पीछे से मोटी होतीं।

लाख की चूड़ी का आकार देकर वह उन्हें मुंगेरियों पर चढ़ाकर गोल और चिकना बनाता और तब एक-एक कर पूरे हाथ की चूड़ियाँ बना चुकने के पश्चात वह उन पर रंग करता।

© NCERT not to be republished

बदलू यह कार्य सदा ही एक मचिये पर बैठकर किया करता था जो बहुत ही पुरानी थी। बगल में ही उसका हुक्का रखा रहता जिसे वह बीच-बीच में पीता रहता। गाँव में मेरा दोपहर का समय अधिकतर बदलू के साथ बीतता। वह मुझे 'लला' कहा करता और मेरे पहुँचते ही मेरे लिए तुरंत एक मचिया मँगा देता। मैं घंटों बैठे-बैठे उसे इस प्रकार चूड़ियाँ बनाते देखता रहता। लगभग रोज ही वह चार-छह जोड़े चूड़ियाँ बनाता। पूरा जोड़ा बना लेने पर वह उसे बेलन पर चढ़ाकर कुछ क्षण चुपचाप देखता रहता मानो वह बेलन न होकर किसी नव-वधू की कलाई हो।

बदलू मनिहार था। चूड़ियाँ बनाना उसका पैतृक पेशा था और वास्तव में वह बहुत ही सुंदर चूड़ियाँ बनाता था। उसकी बनाई हुई चूड़ियों की खपत भी बहुत थी। उस गाँव में तो सभी स्त्रियाँ उसकी बनाई हुई चूड़ियाँ पहनती ही थीं आस-पास के गाँवों के लोग भी उससे चूड़ियाँ ले जाते थे। परंतु वह कभी भी चूड़ियों को पैसों से बेचता न था। उसका अभी तक वस्तु-विनिमय का तरीका था और लोग अनाज के बदले उससे चूड़ियाँ ले जाते थे। बदलू स्वभाव से बहुत सीधा था। मैंने कभी भी उसे किसी से झगड़ते नहीं देखा। हाँ, शादी-विवाह के अवसरों पर वह अवश्य ज़िद पकड़ जाता था। जीवन भर चाहे कोई उससे मुफ़्त चूड़ियाँ ले जाए परंतु विवाह के अवसर पर वह सारी कसर निकाल लेता था। आखिर सुहाग के जोड़े का महत्व ही और होता है। मुझे याद है, मेरे मामा के यहाँ किसी लड़की के विवाह पर जरा-सी किसी बात पर बिगड़ गया था और फिर उसको मनाने में लोहे लग गए थे। विवाह में इसी जोड़े का मूल्य इतना बढ़ जाता था कि उसके लिए उसकी घरवाली को सारे वस्त्र मिलते, ढेरों अनाज मिलता, उसको अपने लिए पगड़ी मिलती और रुपये जो मिलते सो अलग।

यदि संसार में बदलू को किसी बात से चिढ़ थी तो वह थी काँच की चूड़ियों से। यदि किसी भी स्त्री के हाथों में उसे काँच की चूड़ियाँ दिख जातीं तो वह अंदर-ही-अंदर कुढ़ उठता और कभी-कभी तो दो-चार बातें भी सुना देता।

मुझसे तो वह घंटों बातें किया करता। कभी मेरी पढ़ाई के बारे में पूछता, कभी मेरे घर के बारे में और कभी यों ही शहर के जीवन के बारे में। मैं उससे कहता कि शहर में सब काँच की चूड़ियाँ पहनते हैं तो वह उत्तर देता, ''शहर की बात और है, लला! वहाँ तो सभी कुछ होता है। वहाँ तो औरतें अपने मरद का हाथ पकड़कर सड़कों पर घूमती भी हैं और फिर उनकी कलाइयाँ नाज़ुक होती हैं न! लाख की चूड़ियाँ पहनें तो मोच न आ जाए।''

कभी-कभी बदलू मेरी अच्छी खासी खातिर भी करता। जिन दिनों उसकी गाय के दूध होता वह सदा मेरे लिए मलाई बचाकर रखता और आम की फसल में तो मैं रोज़ ही उसके यहाँ से दो-चार आम खा आता। परंतु इन सब बातों के अतिरिक्त जिस कारण वह मुझे अच्छा लगता वह यह था कि लगभग रोज़ ही वह मेरे लिए एक-दो गोलियाँ बना देता।

मैं बहुधा हर गर्मी की छुट्टी में अपने मामा के यहाँ चला जाता और एक-आध महीने वहाँ रहकर स्कूल खुलने के समय तक वापस आ जाता। परंतु दो-तीन बार ही मैं अपने मामा के यहाँ गया होऊँगा तभी मेरे पिता की एक दूर के शहर में बदली हो गई और एक लंबी अवधि तक मैं अपने मामा के गाँव न जा सका। तब लगभग आठ-दस वर्ष के बाद जब मैं वहाँ गया तो इतना बड़ा हो चुका था कि लाख की गोलियों में मेरी रुचि नहीं रह गई थी। अतः गाँव में होते हुए भी कई दिनों तक मुझे बदलू का ध्यान न आया। इस बीच मैंने देखा कि गाँव में लगभग सभी स्त्रियाँ काँच की चूड़ियाँ पहने हैं। विरले ही हाथों

में मैंने लाख की चूड़ियाँ देखीं। तब एक दिन सहसा मुझे बदलू का ध्यान हो आया। बात यह हुई कि बरसात में मेरे मामा की छोटी लड़की आँगन में फिसलकर गिर पड़ी और उसके हाथ की काँच की चूड़ी टूटकर उसकी कलाई में घुस गई और उससे खून बहने लगा। मेरे मामा उस समय घर पर न थे। मुझे ही उसकी मरहम-पट्टी करनी पड़ी। तभी सहसा मुझे बदलू का ध्यान हो आया और मैंने सोचा कि उससे मिल आऊँ। अतः शाम को मैं घूमते-घूमते उसके घर चला गया। बदलू वहीं चबूतरे पर नीम के नीचे एक खाट पर लेटा था।

नमस्ते बदलू काका! मैं ने कहा।

नमस्ते भइया! उसने मेरी नमस्ते का उत्तर दिया और उठकर खाट पर बैठ गया। परंतु उसने मुझे पहचाना नहीं और देर तक मेरी ओर निहारता रहा।

मैं हूँ जनार्दन, काका! आपके पास से गोलियाँ बनवाकर ले जाता था। मैंने अपना परिचय दिया।

बदलू फिर भी चुप रहा। मानो वह अपने स्मृति पटल पर अतीत के चित्र उतार रहा हो और तब वह एकदम बोल पड़ा, आओ-आओ, लला बैठो! बहुत दिन बाद गाँव आए।

हाँ, इधर आना नहीं हो सका, काका! मैंने चारपाई पर बैठते हुए उत्तर दिया।

कुछ देर फिर शांति रही। मैंने इधर-उधर दृष्टि दौड़ाई। न तो मुझे उसकी मचिया ही नज़र आई, न ही भट्ठी।

आजकल काम नहीं करते काका? मैंने पूछा।

नहीं लला, काम तो कई साल से बंद है। मेरी बनाई हुई चूड़ियाँ कोई पूछे तब तो। गाँव-गाँव में काँच का प्रचार हो गया है। वह कुछ देर चुप रहा, फिर बोला, मशीन युग है न यह, लला! आजकल सब काम मशीन से होता है। खेत भी मशीन से जोते जाते हैं और फिर जो सुंदरता काँच की चूड़ियों में होती है, लाख में कहाँ संभव है?

लेकिन काँच बड़ा खतरनाक होता है। बड़ी जल्दी टूट जाता है। मैंने कहा।

नाज़ुक तो फिर होता ही है लला! कहते-कहते उसे खाँसी आ गई और वह देर तक खाँसता रहा।

मुझे लगा उसे दमा है। अवस्था के साथ-साथ उसका शरीर ढल चुका था। उसके हाथों पर और माथे पर नसें उभर आई थीं।

जाने कैसे उसने मेरी शंका भाँप ली और बोला, ''दमा नहीं है मुझे। फसली खाँसी है। यही महीने-दो-महीने से आ रही है। दस-पंद्रह दिन में ठीक हो जाएगी।''

मैं चुप रहा। मुझे लगा उसके अंदर कोई बहुत बड़ी व्यथा छिपी है। मैं देर तक सोचता रहा कि इस मशीन युग ने कितने

हाथ काट दिए हैं। कुछ देर फिर शांति रही जो मुझे अच्छी नहीं लगी।

आम की फसल अब कैसी है, काका? कुछ देर पश्चात मैंने बात का विषय बदलते हुए पूछा।

''अच्छी है लला, बहुत अच्छी है'' उसने लहककर उत्तर दिया और अंदर अपनी बेटी को आवाज़ दी, ''अरी रज्जो, लला के लिए आम तो ले आ।'' फिर मेरी ओर मुखातिब होकर बोला, ''माफ़ करना लला, तुम्हें आम खिलाना भूल गया था।''

नहीं, नहीं काका आम तो इस साल बहुत खाए हैं।

वाह-वाह, बिना आम खिलाए कैसे जाने दूँगा तुमको?

मैं चुप हो गया। मुझे वे दिन याद हो आए जब वह मेरे लिए मलाई बचाकर रखता था।

गाय तो अच्छी है न काका? मैंने पूछा।

गाय कहाँ है, लला! दो साल हुए बेच दी। कहाँ से खिलाता?

इतने में रज्जो, उसकी बेटी, अंदर से एक डलिया में ढेर से आम ले आई।

यह तो बहुत हैं काका! इतने कहाँ खा पाऊँगा? मैंने कहा।

वाह-वाह! वह हँस पड़ा, शहरी ठहरे न! मैं तुम्हारी उमर का था तो इसके चौगुने आम एक बखत में खा जाता था।

आप लोगों की बात और है। मैंने उत्तर दिया।

अच्छा, बेटी, लला को चार-पाँच आम छाँटकर दो। सिंदूरी वाले देना। देखो लला कैसे हैं? इसी साल यह पेड़ तैयार हुआ है।

रज्जो ने चार-पाँच आम अंजुली में लेकर मेरी ओर बढ़ा दिए। आम लेने के लिए मैंने हाथ बढ़ाया तो मेरी निगाह एक क्षण के लिए उसके हाथों पर ठिठक गई। गोरी-गोरी कलाइयों पर लाख की चूड़ियाँ बहुत फब रही थीं।

बदलू ने मेरी दृष्टि देख ली और बोल पड़ा, यही आखिरी जोड़ा बनाया था जमींदार साहब की बेटी के विवाह पर। दस आने पैसे मुझको दे रहे थे। मैंने जोड़ा नहीं दिया। कहा, शहर से ले आओ।

मैंने आम ले लिए और खाकर थोड़ी देर पश्चात चला आया। मुझे प्रसन्नता हुई कि बदलू ने हारकर भी हार नहीं मानी थी। उसका व्यक्तित्व काँच की चूड़ियों जैसा न था कि आसानी से टूट जाए।

प्रश्न-अभ्यास

सुनिए-बोलिए

1. एक समय था जब हस्तकारीगरों का बड़ा बोलबाला था। त्यौहार, विवाह आदि अवसरों पर उनकी बनाई वस्तुएँ प्रयोग करना हमारी संस्कृति थी। आज ये हस्तकारीगर कम होते जा रहे हैं। इसका क्या कारण है? चर्चा कीजिए।
2. बाज़ार में बिकनेवाले सामानों की डिज़ाइनों में परिवर्तन होता ही रहता है। हमारे खान-पान, रहन-सहन, कपड़ों में भी बदलाव होता ही रहता है। इस बदलाव को आप कहाँ तक उचित समझते हैं? इसके पक्ष-विपक्ष में चर्चा कीजिए।

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

पढ़िए

1. पाठ का पहला चित्र देखिए। इसमें बदलू लाख की चूड़ियाँ बना रहा है। इससे संबंधित वाक्य पाठ से ढूँढिए और लाख की चूड़ियाँ बनाने की प्रक्रिया लिखिए।
2. बचपन में लेखक अपने मामा के गाँव चाव से क्यों जाता था? और बदलू को 'बदलू मामा' न कहकर 'बदलू काका' क्यों कहता था?
3. बदलू के मन में ऐसी कौनसी व्यथा थी जो लेखक से छिपी न रह सकी?
4. निम्नलिखित अवतरण पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

"उस गाँव में तो सभी स्त्रियाँ उसकी बनाई हुई चूड़ियाँ पहनती ही थीं आस-पास के गाँवों के लोग भी उससे चूड़ियाँ ले जाते थे। परंतु वह कभी भी चूड़ियों को पैसों से नहीं बेचता था। उसका अभी तक वस्तु-विनिमय का तरीका था और लोग अनाज के बदले उससे चूड़ियाँ ले जाते थे..... विवाह में इसी जोड़े का मूल्य इतना बढ़ जाता था कि उसके लिए उसकी घरवाली को बहुत सारे वस्त्र मिलते, ढेरों अनाज मिलता, उसको अपने लिए पगड़ी और रुपये जो मिलते सो अलग।" इस वाक्य से पता चलता है कि वस्तु-विनिमय की पद्धति हमारी संस्कृति का हिस्सा थी। किसान अपने अनाज का कुछ हिस्सा लुहार, बढ़ई, मनिहार, नाई, धोबी, कुम्हार, माली, पनेरी, बँसोर, जुलाहा आदि को देते थे। वे इसके बदले में किसान की सहायता करते थे। विवाह आदि कार्यक्रमों में इनका विशेष महत्व था। हमारी परंपराओं में इन्हें विशेष स्थान दिया गया था। विवाह आदि शुभकार्यों के मौकों पर इन्हें वस्त्र आदि भेंट किए जाते थे। इस प्रकार गाँव के लोग एक-दूसरे से जुड़े रहते। सभी कलाओं का पोषण भी होता रहता। आज भी कुछ गाँवों में यह पद्धति थोड़ी मात्रा में प्रचलित है। किंतु आज मशीन युग आ गया। वस्तु-विनिमय की पद्धति के स्थान पर मुद्राओं से वस्तुओं का आदान प्रदान होने लगा। शादी के जोड़ों का महत्व रुपयों से आँका जाने लगा। कहानी में इस घटना को कहानीकार इस प्रकार दर्शाता है- "यही आखिरी जोड़ा बनाया था जमींदार साहब की बेटी के विवाह पर। दस आने पैसे मुझको दे रहे थे। मैंने जोड़ा नहीं दिया। कहा, शहर से ले आओ।"

   1. वस्तु-विनिमय क्या है? हमारी संस्कृति में इसका क्या महत्व था?
   2. हस्तकारीगरों की बुरी हालत के लिए जिम्मेदार केवल मशीनें ही नहीं हैं, वस्तुओं के महत्व को मुद्राओं से तुलना करना भी है। इस बात से आप कहाँ तक सहमत हैं?
   3. किसी भी वस्तु के महत्व की तुलना मुद्राओं से क्यों नहीं की जा सकती?

5. पाठ पढ़िए। निम्ननिलखित बिंदुओं के बारे में एक अनुच्छेद लिखिए।
   - लेखक के बचपन में बदलू की स्थिति
   - लेखक के युवावस्था में बदलू की स्थिति

© NCERT not to be republished

लिखिए

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर कम से कम पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. लाख और काँच की चूड़ियों की तुलना करते हुए पाँच वाक्य लिखिए।
2. हस्तकारीगरों की दुर्दशा के प्रमुख कारण लिखिए।
3. इस पाठ से आपने क्या सीखा?

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ-दस वाक्यों में लिखिए।

1. बदलू के घर लेखक को जाना बहुत पसंद था। क्योंकि वह उससे बड़े प्रेम से मिलता। उसे प्यार से लला कहता। उसे मीठे-मीठे आम खिलाता। आप अपने घर आए मेहमान का अतिथि सत्कार कैसे करेंगे?
2. आपको छुट्टियों में किसके घर जाना सबसे अधिक अच्छा लगता है? वहाँ की दिनचर्या अलग कैसे होती है? लिखिए।
3. मशीनी युग में अनेक परिवर्तन आए दिन होते रहते हैं। आपने पाठ में इस परिवर्तन के कारण बदलू के जीवन में आए बदलाव को देखा। आपके घर में कौन-कौन से काम मशीनों द्वारा किए जाते हैं? इन्हें मशीनों से करने के कारण हमारे रहन-सहन में क्या बदलाव आया है?

शब्द भंडार

1. वाक्य पढ़िए। इसमें प्रयुक्त मुहावरे का प्रयोग समझिए। इस मुहावरे का पुनः वाक्य प्रयोग कीजिए।

- रंग बिरंगी गोलियाँ जो किसी भी बच्चे का मन मोह लें।
  - मन मोह लेना
- विवाह के अवसर पर वह सारी कसर निकाल लेता था।
  - कसर निकालना
- उसको मनाने में लोहे लग गये थे।
  - लोहा लगना

भाषा की बात

1. **'बदलू'** कहानी की दृष्टि से **पात्र** है और व्याकरण की दृष्टि से **संज्ञा**। कोई भी व्यक्ति, स्थान, वस्तु, विचार अथवा भाव संज्ञा कहलाता हैं। संज्ञा के मुख्यतः तीन भेद हैं- **(क) व्यक्तिवाचक संज्ञा,** जैसे- लला, रज्जो, आम, काँच, गाय इत्यादि **(ख)जातिवाचक संज्ञा,** जैसे- चरित्र, स्वभाव, वजन, आकार आदि द्वारा जानी जानेवाली संज्ञा **(ग) भाववाचक संज्ञा,** जैसे- सुंदरता, नाज़ुक, प्रसन्नता इत्यादि जिसमें कोई व्यक्ति नहीं है और न आकार या वजन। परंतु उसका अनुभव होता है। पाठ से तीनों प्रकार की संज्ञाएँ चुनकर लिखिए।

© SCERT not to be republished

2. गाँव की बोली में कई शब्दों के उच्चारण बदल जाते हैं। कहानी में बदलू वक्त (समय) को बखत, उम्र (वय/आयु) को उमर कहता है। इस तरह के अन्य शब्द खोजिए जिनके रूप में परिवर्तन हुआ हो, अर्थ में नहीं।

प्रशंसा

"मशीन युग ने कितने हाथ काट दिए हैं।"– मशीनी युग में अनेक कारीगरों को अपने काम से हाथ धोना पड़ा है। आपने अपने आसपास में इस प्रकार के कई परिवर्तन देखे होंगे। घरेलू उद्योगों को बढ़ावा देने और कारीगरों की भलाई के लिए आप क्या करना चाहेंगे?

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

आपने मेले, बाज़ार आदि में हाथ से बनी कई वस्तुएँ देखी होंगी। इन वस्तुओं को बनाने की कला जानने के लिए किसी हस्तकारीगर के साक्षात्कार के लिए प्रश्नावली का निर्माण कीजिए।

परियोजना कार्य

घरेलू उद्योग से संबंधित चित्र एकत्र कीजिए। उनके बारे में लिखिए।

क्या मैं ये कर सकता हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के भाव के बारे में बातचीत कर सकता हूँ। 2. पाठ के विषय में मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति कर सकता हूँ। 3. पाठ के शब्दों का प्रयोग अपनी भाषा में कर सकता हूँ। 4. घरेलू उद्योग का महत्व बता सकता हूँ। 5. परिचित संदर्भों के विषय में साक्षात्कार ले सकता हूँ।		

© SCERT not to be republished

इकाई-I

3. बस की यात्रा

-हरिशंकर परसाई

प्रस्तावना प्रसंग–

कुछ देर बाद ऐसी दशा हो गई कि कोई हमारा सब असबाब ले ले और हमें लेटने का स्थान दे दे। परन्तु वहाँ कहाँ सज्जनकर वासा। थोड़ी देर में पुनः ट्रेन रुकी तो हम फिर झोंके में आगे की ओर गिरे। संभलने के लिए हाथ जो बढ़ाया तो एक महाशय की गर्दन पर गिर पड़े। वह अपनी सीट से लुढ़ककर नीचे और हम उनके ऊपर। लोगों ने खींच-खींच कर हमें उठाया। एक महाशय बोले– "इन्हें बैठने की जगह देनी चाहिए, नहीं तो आज यहाँ फौज़दारी हो जाएगी।" यह राय लोगों को पसंद आ गई और कुछ व्यक्तियों ने अपने शरीर को सिकोड़-सिकोड़ कर हमें केवल इतना स्थान दिया कि हम केवल बैठ सकें और वह भी दोनों घुटनों पर हाथ रखके उनके सहारे।

'रेलयात्रा' से– विश्वंभरनाथ कौशिक

प्रश्न

1. प्रस्तुत अवतरण में किस चीज़ की यात्रा का वर्णन है?
2. लोगों ने लेखक के मित्र को बैठने के लिए स्थान क्यों दिया?
3. आजकल यात्रा कठिन क्यों हो गई है?

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

हम पाँच मित्रों ने तय किया कि शाम चार बजे की बस से चलें। पन्ना से इसी कंपनी की बस सतना के लिए घंटे भर बाद मिलती है जो जबलपुर की ट्रेन मिला देती है। सुबह घर पहुँच जाएँगे। हम में से दो को सुबह काम पर हाज़िर होना था इसलिए वापसी का यही रास्ता अपनाना ज़रूरी था। लोगों ने सलाह दी कि समझदार आदमी इस शाम वाली बस से सफ़र नहीं करते। क्या रास्ते में डाकू मिलते हैं? नहीं, बस डाकिन है।

बस को देखा तो श्रद्धा उमड़ पड़ी। खूब वयोवृद्ध थी। सदियों के अनुभव के निशान लिए हुए थी। लोग इसलिए इससे सफ़र नहीं करना चाहते कि वृद्धावस्था में इसे कष्ट होगा। यह बस पूजा के योग्य थी। उस पर सवार कैसे हुआ जा सकता है।

बस-कंपनी के एक हिस्सेदार भी उसी बस से जा रहे थे। हमने उनसे पूछा- ''यह बस चलती भी है?'' वह बोले- ''चलती क्यों नहीं है जी अभी चलेगी।'' हमने कहा- ''वही तो हम देखना चाहते हैं। अपने आप चलती है यह? हाँ जी, और कैसे चलेगी?''

गज़ब हो गया। ऐसी बस अपने आप चलती है?

हम आगा-पीछा करने लगे। डाक्टर मित्र ने कहा- ''डरो मत, चलो! बस अनुभवी है। नयी-नवेली बसों से ज्यादा विश्वसनीय है। हमें बेटों की तरह प्यार से लेकर चलेगी।''

हम बैठ गए। जो छोड़ने आए थे, वे इस तरह देख रहे थे जैसे अंतिम विदा दे रहे हैं। उनकी आँखें कह रही थीं- ''आना-जाना तो लगा ही रहता है। आया है, सो जाएगा- राजा, रंक, फकीर। आदमी को कूच करने के लिए एक निमित्त चाहिए।''

इंजन सचमुच स्टार्ट हो गया। ऐसा, जैसा सारी बस ही इंजन है और हम इंजन के भीतर बैठे हैं। काँच बहुत कम बचे थे। जो बचे थे, उनसे हमें बचना था। हम फ़ौरन खिड़की से दूर सरक गए। इंजन चल रहा था। हमें लग रहा था कि हमारी सीट के नीचे इंजन है।

बस सचमुच चल पड़ी और हमें लगा कि यह गांधीजी के असहयोग और सविनय अवज्ञा आंदोलनों के वक्त अवश्य जवान रही होगी। उसे ट्रेनिंग मिल चुकी थी। हर हिस्सा दूसरे से असहयोग कर रहा था। पूरी बस सविनय अवज्ञा आंदोलन की दौर से गुज़र रही थी। सीट का बॉडी से असहयोग चल रहा था। कभी लगता सीट बॉडी को छोड़कर आगे निकल गई है। कभी लगता कि सीट को छोड़कर बॉडी आगे भागी जा रही है। आठ-दस मील चलने पर सारे भेदभाव मिट गए। यह समझ में नहीं आता था कि सीट पर हम बैठे हैं या सीट हम पर बैठी है।

एकाएक बस रुक गई। मालूम हुआ कि पेट्रोल की टंकी में छेद हो गया है। ड्राइवर ने बाल्टी में पेट्रोल निकालकर उसे बगल में रखा और नली डालकर इंजन में भेजने लगा। अब मैं उम्मीद कर रहा था कि थोड़ी देर बाद बस-कंपनी के हिस्सेदार इंजन को निकालकर गोद में रख लेंगे और उसे नली से पेट्रोल पिलाएँगे, जैसे माँ बच्चे के मुँह में दूध की शीशी लगाती है।

बस की रफ़्तार अब पंद्रह-बीस मील हो गई थी। मुझे उसके किसी हिस्से पर भरोसा नहीं था। ब्रेक फेल हो सकता है, स्टीयरिंग टूट सकता है। प्रकृति के दृश्य बहुत लुभावने थे। दोनों तरफ़ हरे-भरे पेड़ थे जिन पर पक्षी बैठे थे। मैं हर पेड़ को अपना दुश्मन समझ रहा था। जो भी पेड़ आता, डर लगता कि इससे बस टकराएगी। वह निकल जाता तो दूसरे पेड़ का इंतज़ार करता। झील दिखती तो सोचता कि इसमें बस गोता लगा जाएगी।

एकाएक फिर बस रुकी। ड्राइवर ने तरह-तरह की तरकीबें कीं पर वह चली नहीं। सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू हो गया था, कंपनी के हिस्सेदार कह रहे थे- ''बस तो फर्स्ट क्लास है जी! यह तो इत्तफ़ाक की बात है।''

क्षीण चाँदनी में वृक्षों की छाया के नीचे वह बस बड़ी दयनीय लग रही थी। लगता, जैसे कोई वृद्धा थककर बैठ गई हो। हमें ग्लानि हो रही थी कि बेचारी पर लदकर हम चले आ रहे हैं। अगर इसका प्राणांत हो गया तो इस बियाबान में हमें इसकी अंत्येष्टि करनी पड़ेगी।

हिस्सेदार साहब ने इंजन खोला और कुछ सुधारा। बस आगे चली। उसकी चाल और कम हो गई थी।

धीरे-धीरे वृद्धा की आँखों की ज्योति जाने लगी। चाँदनी में रास्ता टटोलकर वह रेंग रही थी। आगे या पीछे से कोई गाड़ी आती दिखती तो वह एकदम किनारे खड़ी हो जाती और कहती- ''निकल जाओ, बेटी! अपनी तो वह उम्र ही नहीं रही।''

एक पुलिया के ऊपर पहुँचे ही थे कि एक टायर फिस्स करके बैठ गया। वह बहुत ज़ोर से हिलकर थम गई। अगर स्पीड में होती तो उछलकर नाले में गिर जाती। मैंने उस कंपनी के हिस्सेदार की तरफ़ पहली बार श्रद्धाभाव से देखा। वह टायरों की हालत जानते हैं फिर भी जान हथेली पर लेकर इसी बस से सफ़र कर रहे हैं। उत्सर्ग की ऐसी भावना दुर्लभ है। सोचा, इस आदमी के साहस और बलिदान भावना का सही उपयोग नहीं हो रहा है। इसे तो किसी क्रांतिकारी आंदोलन का नेता होना चाहिए। अगर बस नाले में गिर पड़ती और हम सब मर जाते तो देवता बाँहें पसारे उसका इंतज़ार करते। कहते- ''वह महान आदमी आ रहा है जिसने एक टायर के लिए प्राण दे दिए। मर गया, पर टायर नहीं बदला।''

दूसरा घिसा टायर लगाकर बस फिर चली। अब हमने वक्त पर पन्ना पहुँचने की उम्मीद छोड़ दी थी। पन्ना कभी भी पहुँचने की उम्मीद छोड़ दी थी। पन्ना क्या, कहीं भी, कभी भी पहुँचने की उम्मीद छोड़ दी थी। लगता था, ज़िंदगी इसी बस में गुज़ारनी है और इससे सीधे उस लोक को प्रयाण कर जाना है। इस पृथ्वी पर उसकी कोई मंज़िल नहीं है। हमारी बेताबी, तनाव खत्म हो गए। हम बड़े इत्मीनान से घर की तरह बैठ गए। चिंता जाती रही। हँसी-मज़ाक चालू हो गया।

© NCERT not to be republished

प्रश्न-अभ्यास

सुनिए-बोलिए

1. इस प्रकार की बस को यातायात के लिए उपयोग में लाना खतरनाक हो सकता है। ऐसी बसों पर रोक लगाना किसकी ज़िम्मेदारी है? आप इस संदर्भ में क्या कर सकते हैं? चर्चा कीजिए।
2. आप अपनी किसी यात्रा के खट्टे-मीठे अनुभव अपने मित्रों को सुनाइए। उसपर चर्चा कीजिए।

पढ़िए

1. "मैंने उस कंपनी के हिस्सेदार की तरफ़ पहली बार श्रद्धाभाव से देखा।"
   - ♦ लेखक के मन में हिस्सेदार साहब के लिए श्रद्धा क्यों जग गई?
2. "लोगों ने सलाह दी कि समझदार आदमी इस शामवाली बस से सफ़र नहीं करते।"
   - ♦ लोगों ने यह सलाह क्यों दी?
3. "ऐसा जैसे सारी बस ही इंजन है और हम इंजन के भीतर बैठे हैं।"
   - ♦ लेखक को ऐसा क्यों लगा?
4. "गज़ब हो गया। ऐसी बस अपने आप चलती है।
   - ♦ लेखक को यह सुनकर हैरानी क्यों हुई?
5. "मैं हर पेड़ को अपना दुश्मन समझ रहा था।"
   - ♦ लेखक पेड़ों को दुश्मन क्यों समझ रहा था?
6. लेखक ने ऐसी बस से यात्रा क्यों की?
7. बस को देखकर लेखक के मन में श्रद्धा क्यों उमड़ पड़ी?
8. लेखक ने ड्राइवर की तुलना एक क्रांतिकारी नेता से क्यों की?
9. सविनय अवज्ञा का उपयोग व्यंग्यकार ने किस रूप में किया है?

© SCERT not to be republished

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

लिखिए

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. यातायात का कौन सा साधन आपको सर्वाधिक पसंद है? कारण बताइए।
2. बस के लिए आपके मन में किस प्रकार के भाव उत्पन्न होते हैं?
3. यात्रा के दौरान हमें क्या-क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिए?

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ-दस वाक्यों में लिखिए।

1. यदि बस जीवित प्राणी होती, बोल सकती, तो वह अपनी बुरी हालत और भारी बोझ के कष्ट को किन शब्दों में व्यक्त करती?
2. यदि आप इस बस से विहार यात्रा पर जाते तो आपके मन में क्या-क्या विचार उत्पन्न होते?

शब्द भंडार

1. 'बस', 'वश', 'बस' तीन शब्द हैं- इनमें 'बस' सवारी के अर्थ में, 'वश' अधीनता के अर्थ में, और 'बस' पर्याप्त (काफ़ी) के अर्थ में प्रयुक्त होता है, जैसे-
   - बस से चलना होगा।
   - मेरे वश में नहीं है।
   - अब बस करो।
   - उपर्युक्त वाक्यों के समान 'वश' और 'बस' शब्द से दो-दो वाक्य बनाइए।
2. "हम फ़ौरन खिड़की से दूर सरक गये। चाँदनी में रास्ता टटोलकर वह रेंग रही थी।" दिये गये वाक्यों में आई 'सरकना' और 'रेंगना' जैसी क्रियाएँ दो प्रकार की गतियाँ दर्शाती हैं। ऐसी कुछ और क्रियाएँ एकत्र कीजिए जो गति के लिए प्रयुक्त होती हैं, जैसे- घूमना इत्यादि। इन्हें वाक्यों में प्रयोग कीजिए।
3. "काँच बहुत कम बचे थे। जो बचे थे, उनसे हमें बचना था।"

   इस वाक्य में 'बच' शब्द को दो तरह से प्रयोग किया गया है। एक 'शेष' के अर्थ में और दूसरा 'सुरक्षा' के अर्थ में।

   नीचे दिये गये शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करके देखिए। ध्यान रहे, एक ही शब्द वाक्य में दो बार आना चाहिए और शब्दों के अर्थ में कुछ बदलाव होना चाहिए।

   (क) जल (ख) हार

© NCERT not to be republished

भाषा की बात

1. "हम पाँच मित्रों **ने** तय किया कि शाम चार बजे **की** बस **से** चलें। पन्ना से इसी कंपनी की बस सतना के लिए घंटे भर बाद मिलती है।"
   ऊपर दिये गये वाक्यों में ने, की, से आदि वाक्य के दो शब्दों के बीच संबंध स्थापित कर रहे हैं। ऐसे शब्दों को कारक कहते हैं। इसी तरह दो वाक्यों को एक साथ जोड़ने के लिए 'कि' का प्रयोग होता है।
   - कहानी से दोनों प्रकार के चार वाक्यों को चुनिए।
2. बोलचाल में प्रचलित अंग्रेज़ी शब्द 'फर्स्ट क्लास' में दो शब्द हैं- फर्स्ट और क्लास। यहाँ क्लास का विशेषण है- फर्स्ट। चूँकि फर्स्ट संख्या है, फर्स्ट क्लास संख्यावाचक विशेषण का उदाहरण है। 'महान आदमी' में किसी आदमी की विशेषता है- महान। यह गुणवाचक विशेषण है। संख्यावाचक विशेषण और गुणवाचक विशेषण के दो-दो उदाहरण लिखिए।

प्रशंसा

हम जीवन में अनेक प्रकार की मशीनों का प्रयोग करते हैं। उनके लाभ उठाते हैं। वे हमारे अनेक काम आती हैं, किन्तु हम उनके प्रति संवेदनशील नहीं होते। उनका आभार नहीं मानते। क्योंकि वे निर्जीव होती हैं। किसी एक मशीन का वर्णन करते हुए बताइए कि वह किस प्रकार हमारी सेवा करती है?

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

पाठ में दी गयी बस की तस्वीर देखकर उसकी आत्मकथा लिखिए।

परियोजना कार्य

अपने घर के किसी बड़े-बुजुर्ग से उनके द्वारा की गई किसी यादगार यात्रा के बारे में पूछकर लिखिए।

क्या मैं ये कर सकता हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के भाव के बारे में बातचीत कर सकता हूँ।		
2. पाठ के विषय में मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति कर सकता हूँ।		
3. पाठ के शब्दों का प्रयोग अपनी भाषा में कर सकता हूँ।		
4. अपने द्वारा की गई यात्रा के बारे में बता सकता हूँ।		
5. परिचित वस्तुओं की काल्पनिक आत्मकथा लिखने का प्रयास सकता हूँ।		

© SCERT not to be republished

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

इकाई-I

4. दीवानों की हस्ती

प्रस्तावना प्रसंग–

-भगवतीचरण वर्मा

रानी लक्ष्मीबाई

अल्लूरि सीताराम राजु

भगत सिंह

जब शहीदों की अर्थी उठे धूम से
देश वालों तुम आँसू बहाना नहीं।
पर मनाओ जब आज़ाद भारत का दिन
उस घड़ी तुम हमें भूल जाना नहीं।

सुभाषचंद्र बोस

अशफ़ाक़ुल्ला खान

लौटकर आ सके न जहाँ में तो क्या
याद बनके दिलों में तो आ जाएँगे।
ऐ वतन! ऐ वतन! हमको तेरी कसम
तेरी राहों में जाँ तक लुटा जाएँगे।

– प्रेम धवन

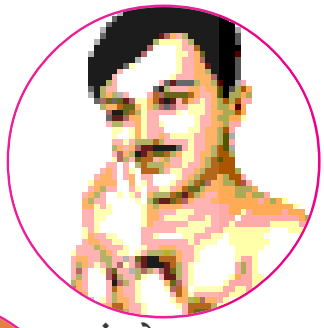

चंद्रशेखर आज़ाद

राजगुरु

रामप्रसाद बिस्मिल

प्रश्न

1. यह गीत किसके बारे में है?
2. चित्र में दिखाये गये लोगों के बारे में आप क्या जानते हैं?
3. इस गीत में शहीदों ने क्या इच्छा ज़ाहिर की है?

© SCERT not to be republished

हम दीवानों की क्या हस्ती,
हैं आज यहाँ, कल वहाँ चले,
मस्ती का आलम साथ चला,
हम धूल उड़ाते जहाँ चले।

आए बनकर उल्लास अभी,
आँसू बनकर बह चले अभी,
सब कहते ही रह गए, अरे,
तुम कैसे आए, कहाँ चले?

किस ओर चले? यह मत पूछो,
चलना है, बस इसलिए चले,
जग से उसका कुछ लिए चले,
जग को अपना कुछ दिए चले,

दो बात कही, दो बात सुनी,
कुछ हँसे और फिर कुछ रोए।
छककर सुख-दुख के घूँटों को
हम एक भाव से पिए चले।

हम भिखमंगों की दुनिया में,
स्वच्छंद लुटाकर प्यार चले,
हम एक निसानी-सी उर पर,
ले असफलता का भार चले।

अब अपना और पराया क्या?
आबाद रहें रुकनेवाले!
हम स्वयं बँधे थे और स्वयं
हम अपने बंधन तोड़ चले।

© SCERT not to be republished

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

प्रश्न-अभ्यास

सुनिए-बोलिए

1. इस कविता में भारत के वीर सपूतों की भावनाओं का चित्रण है। कवि ने उन्हें दीवाना कहा है। वे देश की आज़ादी के दीवाने थे। वे बलिदान देने से नहीं डरते थे। स्वतंत्रता संग्राम के शहीदों की आँखों में किस प्रकार के भारत का सपना रहा होगा? चर्चा कीजिए।
2. "हम भिखमंगों की दुनिया में
   स्वछंद लुटाकर प्रेम चले"
   कवि ने संसार को 'भिखमंगों की दुनिया' क्यों कहा होगा? चर्चा कीजिए।

पढ़िए

1. कवि ने आने को 'उल्लास' और जाने को 'आँसू बनकर बह जाना' क्यों कहा है?
2. भिखमंगों की दुनिया में बेरोक प्यार लुटानेवाला कवि ऐसा क्यों कहता है कि वह अपने हृदय पर असफलता का एक निशान भार की तरह लेकर जा रहा है? क्या वह निराश है या प्रसन्न?
3. कविता में ऐसी कौनसी बात है जो आपको सबसे अच्छी लगी?
4. एक पंक्ति में कवि ने यह कहकर अपने अस्तित्व को नकारा है कि "हम दीवानों की क्या हस्ती, हैं आज यहाँ, कल वहाँ चले।" दूसरी पंक्ति में उसने यह कहकर अपने अस्तित्व को महत्व दिया है कि "मस्ती का आलम साथ चला, हम धूल उड़ाते जहाँ चले" यह फाकामस्ती कही जाती है। कविता में इस प्रकार की अन्य पंक्तियाँ भी हैं, उन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए और अनुमान लगाइए कि कविता में परस्पर विरोधी बातें क्यों की गई हैं?
5. इस कविता में आज़ादी के दीवानों का वर्णन है। आइए! अब आज़ादी के दीवाने अमर शहीद भगत सिंह का एक पत्र पढ़ें। पत्र पढ़कर नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

22 मार्च, 1931.

साथियो!

स्वाभाविक है कि जीने की इच्छा मुझमें भी होनी चाहिए, मैं छिपाना नहीं चाहता, लेकिन मैं एक शर्त पर ज़िंदा रह सकता हूँ कि मैं क़ैद होकर या पाबंद होकर जीना नहीं चाहता।

मेरा नाम हिंदुस्तानी क्रांति का प्रतीक बन चुका है और क्रांतिकारी दल के आदर्शों और कुर्बानियों ने मुझे बहुत ऊँचा उठा दिया है– इतना ऊँचा कि जीवित रहने की स्थिति में इससे ऊँचा मैं हरगिज नहीं हो सकता।

© NCERT not to be republished

आज मेरी कमजोरियाँ जनता के सामने नहीं हैं, अगर मैं फाँसी से बच गया तो वे जाहिर हो जायेंगी और क्रांति का प्रतीक-चिह्न मद्धिम पड़ जायेगा या संभवतः मिट ही जाय लेकिन दिलेराना ढंग से हँसते-हँसते मेरे फाँसी चढ़ने की सूरत में हिन्दुस्तानी माताएँ अपने बच्चों को भगत सिंह बनने की आरजू किया करेंगी और देश की आज़ादी के लिए कुर्बानी देने वालों की तादाद इतनी बढ़ जायेगी कि क्रांति को रोकना साम्राज्यवाद या तमाम शैतानी शक्तियों के बूते की बात नहीं रहेगी।

हाँ, एक विचार भी मेरे मन में आता है कि देश और मानवता के लिए जो कुछ करने की हसरतें मेरे दिल में थीं, उनका हजारवाँ भाग भी पूरा नहीं करा सके, अगर स्वतंत्रता तक जिन्दा रह सकता तब शायद इन्हें पूरा करने का अवसर मिलता और मैं अपनी हसरत पूरी कर सकता।

इसके सिवाय मेरे मन में कभी कोई लालच फाँसी से बचने का नहीं आया, मुझसे अधिक सौभाग्यशाली कौन होगा? आजकल मुझे स्वयं पर बहुत गर्व है, अब तो बड़ी बेताबी से अन्तिम परीक्षा का इन्तज़ार है, कामना है कि यह और नज़दीक हो जाय।

आपका साथी

भगत सिंह

प्रश्न 1. भगत सिंह के पत्र एवं पढ़ी गई कविता 'दीवानों की हस्ती' के भाव में क्या समानता है?

2. भगत सिंह ने स्वयं को सबसे अधिक सौभाग्यशाली क्यों कहा है?

3. भगत सिंह हँसते हुए फाँसी पर क्यों चढ़ना चाहते थे?

लिखिए

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. आज़ादी के दीवाने चाहते हुए भी अपने बंधु-बांधवों के पास क्यों नहीं रह पाते?
2. वीरों की राह निश्चित क्यों नहीं होती?
3. बलिदानी लोग अपना-पराया का भेदभाव क्यों नहीं रखते?
4. जीवन में मस्ती होनी चाहिए, लेकिन कब मस्ती हानिकारक हो सकती है?

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ-दस वाक्यों में लिखिए।

1. हमें सांसारिक सुख-दुख के भाव को समान क्यों मानना चाहिए? इससे हमें क्या लाभ होगा?
2. आप अपने देश के लिए क्या-क्या करना चाहेंगे?

© SCERT not to be republished

शब्द भंडार

1. इस कविता में 'हँसना-रोना', 'कही-सुनी', 'सुख-दुख', 'लिए-दिए', 'अपना-पराया', 'आज-कल' आदि विपरीतार्थक शब्दों का बड़ा सुंदर प्रयोग हुआ है। दो विपरीतार्थक शब्दों का एक ही वाक्य में प्रयोग कीजिए, जैसे-

   हँसना-रोना :- दूसरों पर हँसनेवालों को एक दिन अवश्य रोना पड़ता है।

2. संतुष्टि के लिए कवि ने 'छककर', 'जी भरकर', और 'खुलकर' शब्दों का प्रयोग किया है। इसी भाव के कुछ अन्य शब्द सोचकर लिखिए।

भाषा की बात

1. मुहावरों के प्रयोग से भाषा आकर्षित बनती है। मुहावरे वाक्य के अंग होकर प्रयुक्त होते हैं। इनका अक्षरशः अर्थ नहीं बल्कि लाक्षणिक अर्थ लिया जाता है। उदाहरण के लिए इस कविता में मुहावरे का प्रयोग इस पंक्ति में हुआ है-

   "मस्ती का आलम साथ चला
   हम धूल उड़ाते जहाँ चले।" यहाँ 'धूल उड़ाते चलना' मुहावरे का अर्थ है- उत्साह के साथ आगे बढ़ना। 'धूल' शब्द से बने कुछ अन्य मुहावरों का अर्थ शब्दकोश की सहायता से लिखिए। उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

   धूल उड़ना
   धूल चाटना
   धूल चटाना
   धूल छानना
   धूल फाँकना
   धूल में मिलना
   धूल में मिलाना

© NCERT not to be republished

प्रशंसा

दुनिया में कई प्रकार के लोग बसते हैं। कुछ दूसरों के बंधन में बँधे होते हैं तो कुछ अपने। एक कविता की पंक्ति है–

"जो अपनी हद में रहते हैं
बेहद अपने में होते हैं।
होते आज़ाद वही जो खुद
बंधन में जकड़े होते हैं।"

जीवन में आत्मनियंत्रण के महत्व पर प्रकाश डालिए।

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

कविता आप भी रच सकते हैं। इस कविता के चरणों को आगे बढ़ाने का प्रयास कीजिए।

परियोजना कार्य

किसी स्वतंत्रता सेनानी के संबंध में जानकारी एकत्र कीजिए। उनका संक्षिप्त जीवन परिचय लिखिए।

क्या मैं ये कर सकता हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के भाव के बारे में बातचीत कर सकता हूँ। 2. पाठ के विषय में मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति कर सकता हूँ। 3. पाठ के शब्दों का प्रयोग अपनी भाषा में कर सकता हूँ। 4. पाठ के शब्दों से वाक्य बना सकता हूँ। 5. पाठ के आधार पर राजेश के बारे में कहानी लिख सकता हूँ।		

© SCERT not to be republished

देशभक्ति

देशप्रेम तुम कर लो भाई!
फैले जिसको कहें भलाई।
व्यर्थ निरर्थक बातें छोड़ो
दृढ़ होकर तुम करो भलाई।

मेहनत की उस राह चलो तुम
दूध बहे, फसलें लहराएँ।
जिसको खाकर भुजा बढ़ाएँ
भुजावान मानव कहलाएँ।

पीछे देखोगे तो- अच्छा
कुछ अतीत ही पाओगे।
पर तुम पीछे खड़े रहे तो
पीछे ही रह जाओगे।

देशप्रेम मुझमें ज़्यादा है
बढ़-बढ़ कर ना बात बनाओ।
कोई अच्छा काम करो तुम
फिर वह जनता को दिखलाओ।

असहनीय ईर्ष्या-पिशाचिनी,
चूस रही है रक्त हमारा।
परसुख में अपना सुख समझो,
सीखो साथ-साथ रह पाना।

परसुख देख बिलखनेवाले,
पापी कहीं नहीं सुख पाते।
औरों को सुख देनेवाले
ही बदले में हैं सुख पाते।

अपना लाभ छोड़ थोड़ा-सा,
पर-उपकार किया करते हैं।
देश न मिट्टी को कहते हैं,
ये इन्सानों से बनते हैं।

इक-दूजे की पकड़ कलाई
देशवासियो साथ चलो तुम।
सब धर्मों के लोगों मिलजुल,
भाई जैसे साथ रहो तुम।

धर्म अलग है तो क्या भाई!
मन तो अपना एक है।
उठे, बढ़े, यह देश हमारा,
यही हमारा ध्येय है।

देश हमारा महावृक्ष है,
प्रेम-सुमन इसमें खिलते हैं।
इसे पसीने से सींचें तो
धन-संपदा उगा सकते हैं।

पत्तों के झुरमुट से कोयल
इस कविता के बोल सुनाए।
गीत सुनाकर सब लोगों में
देशप्रेम का भाव जगाए।

तेलुगु मूलरचनाकार
महाकवि गुरजाड़ा वेंकट अप्पाराव
हिन्दी अनुवादक
डॉ. राजीव कुमार सिंह